

Padma Shri



SHRI TULARAM UPRETI

Shri Tularam Upreti is a devoted organic farmer from Sikkim.

2. Born on 14th September, 1926, Shri Upreti after his primary education put all his efforts and energy in traditional farming on his father's 30 acres land where he single handedly grew and managed different types of agricultural crops like paddy, maize, mustard, millet, buckwheat and cardamom to name a few. He has still been managing it at the age of 97 years. His entire family used to support him in his agricultural activities. He never used any kind of chemicals/fertilizers except for cow/goat manure produced by his own cattles which he himself reared, hence he is referred as an organic man.
3. Shri Upreti used cattle manure for crops as the only way of productive farming since he was unaware of the existence of chemical fertilizers until lately. He always believed that organically grown food will always improve the quality of soil for better productivity in future.
4. Shri Upreti is also a social and political worker. In 20 long years of his Panchayat career, he became President of Unit Panchayat twice, Vice- President and member, once each. He was actively engaged in democratic movement of Sikkim in 1973, which culminated in Sikkim becoming the 22nd State of India. He was felicitated by the local MLA & Public for his contributions to the society as Panchayat and other social works. He has always advised local youths to create work culture to sustain and progress in life.



श्री तुलाराम उप्रेती

श्री तुलाराम उप्रेती सिक्किम के एक कर्मठ जैविक किसान हैं।

2. 14 सितंबर, 1926 को जन्मे श्री उप्रेती ने अपनी प्राथमिक शिक्षा के बाद अपने पिता की 30 एकड़ भूमि पर पारंपरिक खेती करने में अपना पूरा बल और ऊर्जा लगा दी और अपने दम पर धान, मक्का, सरसों, बाजरा, कुड़ू और इलायची आदि विभिन्न किस्म की कृषि फसलों को उगाया और उनकी देखरेख की। वह 97 साल की उम्र में भी खेती संभाल रहे हैं। उनका पूरा परिवार कृषि कार्य में उनकी मदद किया करता था। उन्होंने अपनी स्वयं की पाली हुई गौ/बकरियों द्वारा उत्पादित खाद को छोड़कर कभी कोई रसायन/उर्वरक का इस्तेमाल नहीं किया, इसलिए उन्हें जैविक व्यक्ति कहा जाता है।
3. श्री उप्रेती ने खेती के एकमात्र तरीके के रूप में फसलों के लिए मवेशी खाद का प्रयोग किया क्योंकि वह अभी तक यह नहीं जानते थे कि रासायनिक उर्वरक भी हुआ करते हैं। उनका हमेशा से मानना था कि जैविक रूप से उगाए गए खाद्यान्न से भविष्य में बेहतर उपजाऊ मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ती है।
4. श्री उप्रेती एक सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता भी हैं। अपने पंचायती जीवन के 20 वर्षों में, वह दो बार यूनिट पंचायत के अध्यक्ष, एक-एक बार उपाध्यक्ष और सदस्य बने। वह 1973 में सिक्किम के उस लोकतांत्रिक आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप सिक्किम भारत का 22वां राज्य बना। उन्हें, पंचायत और अन्य सामाजिक कार्यों में योगदान के लिए स्थानीय विधायक और जनता द्वारा सम्मानित किया गया। उन्होंने हमेशा स्थानीय युवाओं को जीवन जीने और आगे बढ़ने के लिए एक कार्य संस्कृति पैदा करने की सलाह दी है।